णाणाजीवेण कालाणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १ ॥

णाणाजीवग्गहणमेगजीवपडिसेहट्ठं । कालाणुगमग्गहणं सेसाणिओगद्दारपडिसेहट्ठं । गदिग्गहणं सेसमग्गणापडिसेहफलं । णिरयगइणिद्देसो सेसगइपडिसेहफलो । णेरइयणिद्देसो तत्थट्ठियपुढविकाइयादिपडिसेहफलो । केवचिरं कालादो होंति त्ति एदस्सत्थो– णिरयगदीए णेरइया किमणादि-अपज्जवसिदा, किमणादि-सपज्जवसिदा, किं सादि-अपज्जवसिदा, किं सादि-सपज्जवसिदा[1] त्ति सिस्सस्स आसंकुद्दीवणमेदेण कयं । अधवा णासंकियसुत्तमिदं, किंतु पुच्छासुत्तमिदि वत्तव्वं । एसो अत्थो सव्वसंकासुत्तेसु जोजेयव्वो ।

सव्वद्धा ॥ २ ॥

अणादि-अपज्जवसिदा होंति, सेसतिसु वियप्पेसु णत्थि । कुदो ? सहावदो

नाना जीवोंकी अपेक्षा कालानुगमसे गतिमार्गणाके अनुसार नरकगतिमें नारकी जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ १ ॥

एक जीवके प्रतिषेधार्थ सूत्रमें ' नाना जीव ' का ग्रहण किया है । ' कालानुगम ' पद का ग्रहण शेष अनुयोगद्वारोंके निषेधार्थ है । ' गदि ' पदके ग्रहणका फल शेष मार्गणाओंका प्रतिषेध करना है । ' नरकगति ' पदका निर्देश शेष गतियोंका प्रतिषेधक है । ' नारकी ' पदके निर्देशका फल नरकोंमें स्थित पृथिवीकायिकादि जीवोंका प्रतिषेध करना है । ' कितने काल तक रहते हैं ' इस पदका अर्थ इस प्रकार है– ' नरकगतिमें नारकी जीव क्या अनादि-अपर्यवसित है, क्या अनादि-सपर्यवसित है क्या सादिअपर्यवसित है, और क्या सादि-सपर्यवसित है ' इस प्रकार सूत्र द्वारा शिष्यकी आशंकाका उद्दीपन किया है । अथवा यह आशंका-सूत्र नहीं है, किन्तु पृच्छासूत्र है, ऐसा कहना चाहिये । यह अर्थ शंकासूत्रोंमें जोड़ना चाहिये ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा नरकगतिमें नारकी जीव सर्व काल रहते हैं ॥ २ ॥

नारकी जीव अनादि-अपर्यवसित हैं, शेष तीन विकल्पोंमें नहीं हैं; क्योंकि,

---

१. अ. म. प्रत्योः पज्जवसिदा इति पाठः ।

चेव । ण च सव्वं सहेउअं चेवेत्ति णियमो अत्थि, एयंतवावप्पसंगादो । तम्हा ' ण अण्णहावाइणो जिणा ' इदि एदं सद्दहेयव्वं ।

एवं[1] सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ३ ॥

जहा णेरइयाणं सामण्णेण अणादिओ अपज्जवसिदो संताणकालो वुत्तो तधा सत्तसु पुढवीसु णेरइयाणं पि । पादेक्कं संताणस्स वोच्छेदो ण होदि त्ति वुत्तं होदि ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्ख-पज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता[2] मणुसगदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४ ॥

एदे सुत्तम्मि वुत्तजीवा संताणं पडुच्च किमणादि-अपज्जवसिदा, किमणादि-सपज्जवसिदा, किं सादि-अपज्जवसिदा, किं सादि-सपज्जवसिदा; सादि-सपज्जवसिदा वि संता तत्थ किमेगसमयावट्ठाइणो किं दुसमया[1] किं तिसमया, एवमावलिय-खण-लव-मुहुत्त

ऐसा स्वभावसे ही है । और सब सहेतुक ही हो ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि, ऐसा मान-लेनेमें एकान्तवादका प्रसंग आता है यतः ' जिनदेव अन्यथावादी नही होते इस लिये इसका श्रद्धान करना चाहिये ।

इसी प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा सातों पृथिवियोंमें नारकी जीव सर्व काल रहते हैं ॥ ३ ॥

जिस प्रकार नारकियोंका सामान्यसे अनादि-अपर्यवसित सन्तानकाल कहा गया है है, उसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें नारकियोंका भी सन्तानकाल अनादि-अपर्यवसित है । प्रत्येक पृथिवीमें नारकियोंकी सन्तानका व्युच्छेद नहीं होता, ऐसा इस सूत्रका अभिप्राय है ।

तिर्यंचगतिमें तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी व पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त; तथा मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनी कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ४ ॥

सूत्रमें कहे हुए ये जीव सन्तानकी अपेक्षा ' क्या अनादि अपर्यवसित हैं, क्या अनादि-सपर्यवसित हैं, क्या सादि-अपर्यवसित हैं, क्या सादि-सपर्यवसित है और सादि सपर्यवसित होकर भी वे क्या एक समय अवस्थायी हैं, क्या दो समय अवस्थायी हैं, क्या तीन समय अवस्थायी हैं -- इस प्रकार वे क्या आवली, क्षण, लव, मुहूर्त,

१. अ. स. प्रत्योः एवं इति पाठः । २. अ. स प्रत्योः अपज्जत्ताय इति पाठः ।

१ अ. आ. क. प्रतिषु दुसमया कि तिसमया एव आवलिय इति पाठो नोपलभ्यते

दिवस-पक्ख-मास-उडु-अयण-संवच्छर-पुव्व पव्व-पल्ल-सागरुस्सप्पिणि-कप्पादिकाला-वट्ठाइणो त्ति आसंकिय तस्स उत्तरसुत्तं भणदि –

सव्वद्धा ॥ ५ ॥

सव्वा अद्धा कालो जेसिं ते सव्वद्धा, संताणं पडि तत्थ सव्वकालावट्ठाइणो त्ति वुत्तं होदि ।

मणुसअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ६ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ७ ॥

कुदो ? अणप्पिदगदीदो आगंतूण मणुसअपज्जत्तेसुप्पज्जिय अंतरं विणासिय खुद्दाभवग्गहणमच्छिय[1] णिस्सेसमणप्पिदगदिं गदाणं खुद्दाभवग्गहणमेत्तजहण्णकालुवलंभादो ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८ ॥

दिवस, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, संवत्सर, पूर्व, पर्व, पल्योपम, सागरोपम, उत्सर्पिणी एवं कल्पादि काल तक अवस्थायी हैं इस प्रकार आशंका करके उसका उत्तरसूत्र कहते हैं –

वे जीव सन्तानकी अपेक्षा सर्व काल रहते हैं ॥ ५ ॥

'सर्व हैं अद्धा अर्थात् काल जिनका' इस बहुव्रीहि समासके अनुसार 'सर्वाद्धा' पदका अर्थ 'सर्व काल' होता है, अर्थात् संतानकी अपेक्षा वहां उक्त जीव सर्व काल अवस्थित रहते हैं, यह इस सूत्रका अभिप्राय है ।

मनुष्य अपर्याप्त जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मनुष्य अपर्याप्त जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण काल तक रहते हैं ॥ ७ ॥

क्योंकि, अविवक्षित गतिसे आकर मनुष्य अपर्याप्तोंमें उत्पन्न होकर व अन्तरको नष्ट कर क्षुद्रभवग्रहणकाल तक रहकर निःशेषरूपसे अविवक्षित गतिमें गये हुए उक्त जीवोंका क्षुद्रभवग्रहणमात्र जघन्य काल पाया जाता है ।

वे ही मनुष्य अपर्याप्त जीव उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक रहते हैं ॥ ८ ॥

---

१. अ. आ. प्रत्योः 'मच्छिय' इति पाठः ।

तं जहा - मणुसअपज्जत्तएसु अंतरिय ट्ठिदेसु अणप्पिदगदीदो थोवा जीवा मणुसअपज्जत्तएसु आगंतूण उप्पण्णा। णट्ठमंतरं। तेसि जीवाणं जीविददुचरिमसमओ त्ति पुणो वि[1] उप्पत्तिं पडुच्च अंतरं करिय पुणो अण्णे उप्पाएयव्वा। तत्थ वि उप्पत्तिं पडुच्च अप्पिदजीवाणं जीविददुचरिमसमओ त्ति अंतरं करिय पुणो अण्णे उप्पाएयव्वा। तत्थ वि उप्पत्तिं पडुच्च अप्पिदजीवाणं जीविददुचरिमसमओ त्ति अंतरं करिय अण्णे उप्पाएयव्वा। अणेण पयारेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्त-वारेसु गदेसु तदो णियमा अंतरं होदि। एदम्हि काले आणिज्जमाणे एक्किस्से वारस-लागाए जदि संखेज्जावलियमेत्तो कालो लब्भदि, तो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाग-मेत्तसलागासु किं लभामो त्ति फलेण इच्छं गुणिय पमाणेणोवट्टिदे मणुसअपज्जत्ताणं संताणस्स कालो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो जादो केइमेगमाउट्ठिदिं ठविय आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिरंतरुवक्कमणकालेण गुणिय पमाणेणोवट्टंति[1] तेसिमेसो कालो णागच्छदि।

देवगदीए देवा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ९ ॥

सुगमं।

इसीको स्पष्ट करते हैं - मनुष्य अपर्याप्तक जीवोंके अन्तरित होकर स्थित होनेपर अविवक्षित गतियोंसे स्तोक जीव मनुष्य अपर्याप्तोंमें आकर उत्पन्न हुए। इस प्रकार अन्तर नष्ट हुआ। उन जीवोंके जीवितरहनेके द्विचरम समय तक फिर भी उत्पत्तिकी अपेक्षा अन्तर करके पुनः अन्य जीवोंको मनुष्य अपर्याप्तोंमें उत्पन्न कराना चाहिये। उनमें भी उत्पत्तिकी अपेक्षा विवक्षित जीवोंके जीवितरहनेके द्विचरम समय तक अन्तर करके पुनः अन्य जीवोंको उत्पन्न कराना चाहिये। उनमें भी उत्पत्तिकी अपेक्षा विवक्षित जीवोंके जीवितरहनेके द्विचरम समय तक अन्तर करके अन्य जीवोंको उत्पन्न कराना चाहिये। इस प्रकारसे पल्योपमके असं-ख्यातवें भागप्रमाण बारोंके बीत जानेपर तत्पश्चात नियमसे अन्तर होता है। इस कालके लाते समय 'यदि एक बार-शलाकामें संख्यात आवलीप्रमाण काल लब्ध होता है, तो पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण वार-शलाकाओंमें कितना काल लब्ध होगा?' इस प्रकार फलराशिसे इच्छाराशिको गुणित कर प्रमाणराशिसे अपवर्तित करनेपर मनुष्य अपर्याप्तोंकी सन्तानका काल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है। कितने ही आचार्य एक आयुस्थितिको स्थापित कर आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण निरंतर उपक्रमकालसे गुणित करके प्रमाणसे अपवर्तित करते हैं। उनके उक्त विधानसे यह काल नहीं आता।

देवगतिमें देव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

---

१. अ. प्रतौ पुणो इति पाठः। १. अ. प्रतौ णोवट्टंति इति पाठः

सव्वद्धा ॥ १० ॥

एदं पि सुगमं ।

एवं भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा ॥ ११ ॥

सुगमं ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बीइंदिया तीइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १२ ॥

णत्थि एत्थ किं पि वत्तव्वं, सुगमत्तादो ।

सव्वद्धा ॥ १३ ॥

एदं पि सुगमं ।

देवगतिमें देव सर्व काल रहते हैं ॥ १० ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इसी प्रकार भवनवासी देवोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देवों तक सब देव सर्व काल रहते हैं ॥ ११ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुसार एकेन्द्रिय, एकेन्द्रिय पर्याप्त, एकेन्द्रिय अपर्याप्त; बादर एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त, बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त; सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त; द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव कितने काल तक रहते हैं? ॥१२॥

यहां कुछ भी कहनेके लिये नहीं है, क्योंकि इसका अर्थ सुगम है ।

उक्त जीव सर्व काल रहते हैं ॥ १३ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तापज्जत्ता[1] तसकाइयपज्जत्ता अपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १४ ॥

एत्थ वि णत्थि वत्तव्वं सुगमत्तादो ।

सव्वद्धा ॥ १५ ॥

कायमार्गणाके अनुसार पृथिवीकायिक, पृथिवीकायिक पर्याप्त, पृथिवीकायिक अपर्याप्त; बादर पृथिवीकायिक, बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त; सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त, सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त; अप्कायिक, अप्कायिक पर्याप्त, अप्कायिक अपर्याप्त; बादर अप्कायिक, बादर अप्कायिक पर्याप्त, बादर अप्कायिक अपर्याप्त; सूक्ष्म अप्कायिक सूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक अपर्याप्त; तेजस्कायिक, तेजस्कायिक पर्याप्त, तेजस्कायिक अपर्याप्त; बादर तेजस्कायिक, बादर तेजस्कायिक पर्याप्त, बादर तेजस्कायिक अपर्याप्त; सूक्ष्म तेजस्कायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्त, सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्त; वायुकायिक, वायुकायिक पर्याप्त, वायुकायिक अपर्याप्त; बादर वायुकायिक, बादर वायुकायिक पर्याप्त, बादर वायुकायिक अपर्याप्त; सूक्ष्म वायुकायिक, सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त, सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्त; वनस्पतिकायिक, वनस्पतिकायिक पर्याप्त, वनस्पतिकायिक अपर्याप्त; बादर वनस्पतिकायिक, बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त;। निगोद जीव, निगोद जीव पर्याप्त, निगोद जीवअपर्याप्त; बादर निगोद जीव, बादर निगोद जीव पर्याप्त बादर निगोद जीव अपर्याप्त; सूक्ष्म निगोद जीव, सूक्ष्म निगोद जीव पर्याप्त, सूक्ष्म निगोद जीव अपर्याप्त; बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त; त्रसकायिक, त्रसकायिक पर्याप्त, और त्रसकायिक अपर्याप्त जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ १४ ॥

यहां भी कुछ कहने योग्य नहीं है, क्योंकि, यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सर्व काल रहते है ॥ १५ ॥

---

१. ब. प्रतौ पज्जत्ता इति पाठः ।

सुगमं ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगी पंचवचिजोगी कायजोगी ओरालियकायजोगी ओरालियमिस्सकायजोगी वेउव्वियकायजोगी कम्मइयकायजोगी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १६ ॥

सुगमं

सव्वद्धा ॥ १७ ॥

मणजोगि-वचिजोगीणमद्धा जहण्णेण एगसमओ, उक्कसेण अंतोमुहुत्तं । मणुसअपज्जत्ताणं पुण जहण्णओ उक्कस्सओ वि अंतोमुहुत्तमेत्तो चेव । जदि एवंविहमणुसअपज्जत्ताणं संताणो सांतरो होज्ज तो मण-वचिजोगीणं संताणो सांतरो किण्ण हवे, विसेसाभावादो[२]। ण दव्वपमाणकओ विसेसो, देवाणं संखेज्जभागमेत्तदव्वुवलक्खियवेउव्वियमिस्सकायजोगि[३]संताणस्स वि सव्वद्धप्पसंगादो । एत्थ परिहारो वुच्चदे । तं जहा– ण दव्वबहुत्तं संताणाविच्छेदस्स कारणं, संखेज्जमणुसपज्जत्ताण संताणस्स वि

यह सूत्र सुगम है ।

योगमार्गणाके अनुसार पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी. काययोगी, औदारिककाययोगी, औदारिकमिश्रकाययोगी, वैक्रियिककाययोगी और कार्मणकाययोगी जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ १६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सर्व काल रहते हैं ॥ १७ ॥

शंका— मनोयोगी और वचनयोगियोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है । परन्तु मनुष्य अपर्याप्तोंका जघन्य और उत्कृष्ट काल भी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण ही है । यदि इस प्रकारके मनुष्य अपर्याप्तोंकी सन्तान सान्तर होवे तो मनोयोगी और वचनयोगियोंकी सन्तान सान्तर क्यों नहीं होवे, क्योंकि, उनमें कोई विशेषता नहीं है । यदि द्रव्यप्रमाणकृत विशेषता मानी जाय तो वह भी नहीं बनती, क्योंकि, देवोंके संख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यसे उपलक्षित वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंकी सन्तानके भी सर्व काल रहनेका प्रसंग प्राप्त होता है ।

समाधान — यहां पूर्वोक्त शंकाका परिहार कहते हैं । वह इस प्रकार है— द्रव्यकी अधिकता सन्तानके अविच्छेदका कारण नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेपर

१. ब. प्रती सर्वपदेषु–' जोगि ' इति पाठोऽस्ति । २. ब. प्रतौ विसेसाभावा इति पाठः ।
३. अ. ब. क. प्रतिषु-कायजोग इति पाठः ।

वोच्छेदप्पसंगादो। ण सगद्धाथोवत्तं संताणवोच्छेदस्स कारणं, वेउव्वियमिस्सद्धादो संखेज्जगुणहीणध्दुवलक्खिय'मणजोगिसंताणस्स वि सांतरत्तप्पसंगादो। किंतु जस्स गुणट्ठाणस्स मग्गणट्ठाणस्स वा एगजीवावट्ठाणकालादो पवेसंतरकालो बहुगो होदि तस्सण्णयवोच्छेदो। जस्स पुण कयावि ण बहुओ तस्स ण संताणस्स वोच्छेदो त्ति घेत्तव्वं। मणजोगि-वचिजोगीणं पुण एगसमयो सुट्ठु पविरलो' त्ति एत्थ जहण्ण-कालत्तणेण ण गहिदो।

वेउव्वियमिस्सकायजोगी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १८ ॥

सुगमं।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १९ ॥

कुदो? ओरालियकायजोगट्ठिदतिरिक्ख-मणुस्साणं बे विग्गहे कादूण देवेसुप्पज्जिय सव्वजहण्णेण कालेण पज्जत्तीओ समाणिय अंतरिदाण अंतोमुहुत्त'मेत्तजहण्णकालुवलं-भादो।

संख्यात मनुष्य पर्याप्त जीवोंकी सन्तानके भी व्युच्छेदका प्रसग प्राप्त होता है। अपने कालकी अल्पता भी सन्तानव्युच्छेदका कारण नहीं है क्योंकि, ऐसा माननेपर वैक्रियिकमिश्रकालसे संख्यातगुणे हीन कालसे उपलक्षित मनोयोगिसन्तानके भी सान्तरताका प्रसंग प्राप्त होता है। किन्तु जिस गुणस्थान अथवा मार्गणास्थानसम्बन्धी एक जीवके अवस्थानकालसे प्रवेशान्तरकाल बहुत होता है उसकी सन्तानका व्युच्छेद होता है। जिसका वह काल कदापि बहुत नहीं है उसकी सन्तानका व्युच्छेद नहीं होता, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। परन्तु मनोयोगी व वचन-योगियोंका एक समय बहुत ही विरला पाया जाता है, इस कारण यहां जघन्य कालरूपसे वह नहीं ग्रहण किया गया।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ १८ ॥

यह सूत्र सुगम है।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहते हैं॥ १९॥

क्योंकि, औदारिककाययोगमें स्थित तिर्यंच और मनुष्योंका दो विग्रह करके देवोंमें उत्पन्न होकर और सर्व जघन्य कालसे पर्याप्तियोंको पूर्ण कर वैक्रियिककाययोगके द्वारा अन्तरको प्राप्त हुए उक्त देवोंका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण पाया जाता है।

---

१. अ. क. प्रत्योः पविरशो इति पाठः। २. मु. प्रतौ समाणिय अंतोमुहुत्त इति पाठः।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २० ॥

मणुसअपज्जत्ताणं जधा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो संताणकालो परूविदो तधा एत्थ वि परूवेदव्वो।

आहारकायजोगी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २१ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमयं ॥ २२ ॥

कुदो ? मणजोग-वचिजोगेहिंतो आहारकायजोगं गंतूण बिदियसमए कालं करिय जोगंतरं गयस्स एगसमयकालुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २३ ॥

एत्थ आहारकायजोगीणं दुचरिमसमओ जाव आहारकायजोगप्पवेसस्स अंतरं करिय पुणो उवरिमसमए अण्णे जीवे पवेसिय[1] एवं संखेज्जवारसलागासु उप्पण्णासु तदो णियमा अंतरं होदि । एवं संखेज्जंतोमुहुत्तसमासो वि अंतोमुहुत्तमेत्तो चेव ।

उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक रहते हैं ॥ २० ॥

जिस प्रकार मनुष्य अपर्याप्तोंके पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र सन्तानकालका निरूपण किया जा चुका है उसी प्रकार यहांपर भी निरूपण करना चाहिये

आहारक काययोगी जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ २१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारक काययोगी जीव जघन्यसे एक समय तक रहते हैं ॥ २२ ॥

क्योंकि, मनोयोग और वचनयोगसे आहारककाययोगको प्राप्त होकर व द्वितीय समयमें मरण कर योगान्तरको प्राप्त होनेपर उनके रहनेका एक समय काल पाया जाता है ।

आहारककाययोगी जीव उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त तक रहते हैं ॥ २३ ॥

यहां आहारक काययोगियोंके द्विचरम समय तक आहारककाययोगमें प्रवेशका अन्तर करके पुनः उपरिम समयमें अन्य जीवोंको प्रविष्ठ करके इस प्रकार संख्यात बार-शलाकाओंके उत्पन्न होनेपर तत्पश्चात् नियमसे अन्तर होता है । इस प्रकार संख्यात अन्तर्मुहूर्तोंका जोड़ भी अन्तर्मुहूर्तमात्र ही होता है ।

---

१. मु प्रती पवेसियव्वा । एवं इति पाठः ।

कधं णव्वदे? उक्कस्सकालो अंतोमुहुत्तमेत्तो[1] त्ति सुत्तवयणादो।

आहारमिस्सकायजोगी केवचिरं कालादो होंति? ॥ २४ ॥

सुगमं।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २५ ॥

कुदो? आहारमिस्सकायजोगचरस्स आहारमिस्सकायजोगं गंतूण सुट्ठु जहण्णेण कालेण पज्जत्तीओ समाणिदस्स जहण्णकालुवलंभादो।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २६ ॥

एत्थ वि पुव्वं व संखेज्जंतोमुहुत्ताणं संकलणा कायव्वा।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिसवेदा णवुंसयवेदा अवगदवेदा केवचिरं कालादो होंति? ॥ २७ ॥

सुगमं।

शंका- यह कैसे जाना जाता है कि उन संख्यात अन्तर्मुहूर्तोंका जोड भी मात्र अन्तर्मुहूर्त होता है?

समाधान- 'उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्तप्रमाणमात्र है' इस सूत्रवचनसे जाना जाता है।

आहारकमिश्रकाययोगी जीव कितने काल तक रहते हैं? ॥ २४ ॥

यह सूत्र सुगम है।

आहारकमिश्रकाययोगी जीव जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त तक रहते हैं ॥ २५ ॥

क्योंकि, आहारकमिश्रकाययोग जीवके आहारकमिश्रकाययोगको प्राप्त होकर अतिशय जघन्य कालसे पर्याप्तियोंको पूर्ण करलेनेपर (सूत्रोक्त) जघन्य काल पाया जाता है।

आहारकमिश्रकाययोगी जीव उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त तक रहते हैं ॥ २६ ॥

यहांपर भी पूर्वके समान संख्यात अन्तर्मुहूर्तोंका संकलन करना चाहिये।

वेदमार्गणाके अनुसार स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी और अपगतवेदी जीव कितने काल तक रहते हैं? ॥ २७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

---

१ अ. प्रतौ मेत्ता इति पाठः।

सव्वद्धा ॥ २८ ॥

एदं पि सुगमं ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई अकसाई केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २९ ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ ३० ॥

एदं पि सुगमं ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी विभंगणाणी आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ३१ ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ ३२ ॥

उक्त जीव सर्व काल रहते हैं ॥ २८ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

कषायमार्गणाके अनुसार क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी, लोभकषायी और कषायरहित जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ २९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सर्व काल रहते हैं ॥ ३० ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

ज्ञानमार्गणाके अनुसार मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी, विभंगज्ञानी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी और केवलज्ञानी जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ३१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सर्व काल रहते हैं ॥ ३२ ॥

णत्थि एत्थ वत्तव्वं, सुगमत्तादो ।

संजमाणुवादेण संजदा सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा परिहारसुद्धिसंजदा जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदा संजदासंजदा असंजदा केवचिरं कालादो होंति ॥ ३३ ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ ३४ ॥

एदं पि सुगमं ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा केवचिरं कालादो होंति? ॥ ३५ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमयं ॥ ३६ ॥

कुदो ? उवसंतकसायस्स अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठस्स वा सुहुमसांपराइयगुणट्ठाणं पडिवण्णबिदियसमए कालं करिय देवेसुववण्णस्स एगसमयस्सुवलंभादो ।

यहां कुछ व्याख्यानके योग्य नहीं है, क्योंकि, यह सूत्र सुगम है ।

संयममार्गणाके अनुसार संयत, सामायिकछेदोपस्थापनशुद्धिसंयत, परिहारशुद्धिसंयत, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत, संयतासंयत और असंयत जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ३३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सर्व काल रहते हैं ॥ ३४ ॥

यह भी सुगम है ।

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ३५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत जीव जघन्यसे एक समयतक रहते हैं ॥ ३६ ॥

क्योंकि, उपशान्तकषाय वा अनिवृत्तिबादरसाम्परायप्रविष्ट जीवोंके सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानको प्राप्त होनेके द्वितीय समयमें मरण कर देवोंमें उत्पन्न होनेपर एक समय जघन्य काल पाया जाता है ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३७ ॥

एत्थ संखेज्जंतोमुहुत्तसमासससमुब्भूदो अंतोमुहुत्तकालो परूवेदव्वो।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ३८ ॥

सुगमं।

सव्वद्धा ॥ ३९ ॥

एदं पि सुगमं।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिय-तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिय-सुक्कलेस्सिया केवचिरं कालादो होंति? ॥ ४० ॥

सुगमं।

सव्वद्धा ॥ ४१ ॥

एदं पि सुगमं।

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत जीव उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त तक रहते हैं ॥ ३७ ॥

यहां संख्यात अन्तर्मुहूर्तोंके संकलनसे उत्पन्न हुए अन्तर्मुहूर्त कालकी प्ररूपणा करनी चाहिये।

दर्शनमार्गणाके अनुसार चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी और केवलदर्शनी जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ३८ ॥

यह सूत्र सुगम है।

उक्त जीव सर्व काल रहते हैं ॥ ३९ ॥

यह भी सुगम है।

लेश्यामार्गणाके अनुसार कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, तेजोलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले और शुक्ललेश्यावाले जीव कितने काल तक रहते हैं? ॥ ४० ॥

यह सूत्र सुगम है।

उक्त जीव सर्व काल रहते हैं ॥ ४१ ॥

यह सूत्र भी सुगम है।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिया अभवसिद्धिया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४२ ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ ४३ ॥

एदं पि सुगमं ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी खइयसम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४४ ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ ४५ ॥

एदं पि सुगमं ।

उवसमसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४६ ॥

भव्यमार्गणाके अनुसार भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ४२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक जीव सर्व काल रहते हैं ॥ ४३ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुसार सम्यग्दृष्टि, क्षायिकसम्यग्दृष्टि, वेदकसम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ४४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सर्व काल रहते हैं ? ॥ ४५ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उपशमसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव कितने काल तक रहते हैं? ॥ ४६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ४७ ॥

कुदो? दिट्ठमग्गाणं सम्मामिच्छत्तुवसमसम्मत्ताणि पडिवज्जिय सव्वजहण्णकालं तेसु अच्छिय गुणंतरगदाणं सुट्ठु जहण्णंतोमुहुत्तमेत्तकालुवलंभादो ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४८ ॥

एत्थ एदम्हि काले आणिज्जमाणे अप्पिदगुणट्ठाणकालमेत्तम्हि एगपवेसणकालसलागं करिय एरिसासु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तसलागासुप्पण्णासु तदो णियमा अंतरं होदि । एत्थ सव्वकालसलागाहि गुणकाले गुणिदे उक्कस्सकालो होदि ।

सासणसम्माइट्ठी केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ४९ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमयं ॥ ५० ॥

कुदो? उवसमसम्मत्तद्धाए एगसमयावसेसाए सासणं गंतूण एगसमयमच्छिय

उपशमसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहते हैं ॥ ४७ ॥

क्योंकि, दृष्टमार्गी जीवोंके सम्यग्मिथ्यात्व और उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त कर तथा सर्व जघन्य काल तक इन गुणस्थानोंमें रहकर अन्य गुणस्थानको प्राप्त होनेपर अतिशय जघन्य अन्तर्मुहूर्तमात्र काल पाया जाता है ।

उक्त जीव उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक रहते हैं ॥ ४८ ॥

यहां इस कालके लाते समय विवक्षित गुणस्थानके कालप्रमाण एक प्रवेशनकालको शलाका करके पुनः ऐसी पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण शलाकाओंके उत्पन्न होनेपर तत्पश्चात् नियमसे अन्तर होता है। यहां सब कालशलाकाओंसे गुणस्थानकालको गुणित करनेपर उत्कृष्ट काल होता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ४९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि जीव जघन्यसे एक समय रहते हैं ॥ ५० ॥

क्योंकि, उपशमसम्यक्त्वकालमें एक समय शेष रहनेपर सासादनगुणस्थानको

बिदियसमए मिच्छत्तं गदस्स एगसमयदंसणादो ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५१ ॥

सुगममेदं, सम्मामिच्छत्तकालसमासविहाणेण एदस्स कालस्स समुप्पत्तीदो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी असण्णी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ५२ ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ ५३ ॥

सुगमं ।

आहारा अणाहारा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ५४ ॥

सुगमं

सव्वद्धा ॥ ५४ ॥

सुगमं ।

एव णाणाजीवेण कालाणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

प्राप्त होकर और एक समय रहकर द्वितीय समयमें मिथ्यात्वको प्राप्त होनेपर एक समय जघन्य काल देखा जाता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि जीव उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक रहते हैं ॥ ५१ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यात्वकालके संकलनका जो विधान कहा जा चुका है उसके अनुसार इस कालकी उत्पत्ति होती है ।

संज्ञिमार्गणाके अनुसार संज्ञी और असंज्ञी जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ५२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संज्ञी और असंज्ञी जीव सर्व काल रहते हैं ॥ ५३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारक व अनाहारक जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ५४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारक व अनाहारक जीव सर्व काल रहते हैं ॥ ५५ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा कालानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ